NYAYA - AUTHORITY

न्याय - शब्द

By- Dr. Arun Kumar Sinha
Asso. Professor, Philosophy Department
Raja Singh College, Siwan

(For Part- 1 Hons./Subs. Students)

न्याय दर्शन में '**शब्द**' को एक स्वतन्त्र प्रमाण माना गया है।आप्त पुरुष के वचन को शब्द कहा जाता हैं।आप्त पुरूष वैसे व्यक्ति होते हैं जो सत्य के ज्ञाता और सत्य के वक्ता होते हैं। न्याय सूत्र में शब्द को परिभाषित करते हुए कहा गया है कि 'आप्तोदेशः शब्दः' अर्थात आप्त पुरुष के उपदेश ही शब्द है।आप्त पुरुष के लिए यह आवश्यक है कि वह अपने ज्ञान को दूसरे की भलाई के लिए इस्तेमाल करे।

शब्दों के विभाजन दो दृष्टिकोण से हुआ है।नब्य-न्यायमें शब्द के दो प्रकार माने गए हैं - **लौकिक शब्द** और **वैदिक शब्द।**

लौकिक - मनुस्यों के वचन को लौकिक शब्द कहा जाता है।यह सत्य भी हो सकता है और असत्य भी अर्थात जो आप्त पुरूष के वचन हैं उन्हें प्रमाण के रूप में माना जा सकता है और जो अनाप्त हैं उनके वचनों का कोई भरोसा नहीं होता इसलिए उन्हें प्रमाण नहीं माना जाता।

वैदिक - वेद ईश्वर के द्वारा रचित है इसलिये वे कभी झूठे नहीं हो सकते।वे पूर्णतः सत्य होते हैं, निर्दोष होते हैं।

एक दूसरे दृष्टिकोण से शब्द को दो हिस्सों में बांटा गया है - **दृष्टार्थ** और **अदृष्टार्थ।**

दृष्टार्थ - शब्द ज्ञान जो संसार की प्रत्यक्ष की जा सकने वाली वस्तुओं से सम्बन्धित हो उसे दृष्टार्थ शब्द कहा जाता है।जैसे-वर्षा के सम्बन्ध में योग्य किसान की उक्ति या हिमालय के सम्बन्धमें किसी के द्वारा रखा गया बात।

अदृष्टार्थ - प्रत्यक्ष नहीं कि जाने वाली वस्तु से सम्बन्धित शब्द अदृष्टार्थ कहे जाते हैं। जैसे - पाप-पुण्य, जीव के नित्यता आदि के सम्बन्ध में चिंतकों द्वारा प्रतिपादित उक्तियाँ।

न्याय दर्शन में वाक्य को एक स्वतन्त्र प्रमाण के रूप में माना गया है अतः वाक्य की विवेचना आवश्यक प्रतीत होता है।

पद या पदों के समूह को वाक्य कहा जाता है।पदों में दो प्रकार की शक्तियाँ होती हैं -अविद्या तथा लक्षण।पद शक्ति के विषय में प्राचीन नैयायिकों का मत है कि ईश्वर की इच्छा पर यह निर्भर करती है।ईश्वर जैसा संकेत करता है वैसा ही किसी शब्द का अर्थ होता है।

नब्य-नैयायिक इससे भिन्न विचार रखते हैं।उन्हों ने माना है कि अन्य शक्तियों के संकेत पर भी शब्द की शक्ति निर्भर करती है।

वाक्यों के सार्थक होने के लिए चार शर्तों का पालन आवश्यक माना जाता है - आकांक्षा(expectancy),योग्यता(fitness),सन्निधि(proximity)और तात्पर्य(intention)।

आकांक्षा - वाक्य के एक ही पद से उसका अर्थ स्पष्ट नहीं होता बल्कि उसके सभी पदों में एक संबंध होता है एक दूसरे की अपेक्षा होती है जिसके कारण वाक्य का अर्थ जाहिर होता है । इस संबंध को अथवा अपेक्षा को ही आकांक्षा कहते हैं। यदि कोई कहता है 'लाओ' जिससे कहा जाएगा कि वह यह नहीं कहता कि क्या लाए ,जब तक की आदेश देने वाला पुस्तक ,कलम ,घड़ा ,पानी आदि में से किसी वस्तु का नाम ना ले जब कोई कहता है पुस्तक लाओ तभी इस वाक्य का अर्थ पूरा होता है। योग्यता - वाक्य से जो कुछ बोधित होता है उसका यदि कोई विरोध नहीं है तो उसे ही उसके पदों की योग्यता कहते हैं। यदि कोई कहता है कि पानी से भूमि सिंची जाती है इसमें कोई बाधा नहीं है। किंतु यदि यह कहा जाता है कि अग्नि से भूमि सिंची जाती है तो इस कथन में पदों के बीच विरोध है। अग्नि और सिंचित विरोध पद है इसलिए पानी और सिंचन के बीच योग्यता सही है। सन्निधि - वाक्य से तभी अर्थ निकल सकता है जब उसके पदों में समय और स्थान की दृष्टिओं से सामीप्य हो इसे ही सन्निधि कहा जाता है। यदि कोई व्यक्ति कहता है आम ----- खाओ तो इन पदों में आकांक्षा और योग्यता होते हुए भी इनसे कोई अर्थ नहीं निकल सकता क्योंकि इनमें उचित सामीप्य नहीं है ।

तात्पर्य - एक पद के विभिन्न अर्थ होते हैं अतः वाक्य में प्रयुक्त पद का अर्थ तभी जाना जा सकता है जबकि कहने वाले के तात्पर्य को जान लिया जाए। सैंधव शब्द के दो अर्थ होते हैं नमक और सिंध देश का घोड़ा ।भोजन करने के समय कोई कहता है सैंधव लाओ यहां पर उसका तात्पर्य नमक से है किंतु यात्रा या युद्ध के समय वह कहता है सैंधव लाओ तब इस वाक्य का अर्थ नमक से नहीं बल्कि घोड़ा से ही स्पष्ट होगा ।